डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID : principalcmjcollege@gmail.com Web: www.cmjcollege.com Mob. No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों के लिए ऑनलाइन कोर्स मैटेरियल (दिनांक–13 अप्रैल, 2020)

निर्गुण और सगुण भक्ति के स्वरूप पर विचार

शक्तिकाल में निर्गुण और सगुण की दो महत्त्वपूर्ण धाराएँ प्रवाहित हुईं। निर्गुण काव्यधारा में दो षाखाएँ हैं। एक, संत काव्यधारा या ज्ञानमार्गी षाखा और दूसरा सूफी काव्यधारा या प्रेममार्गी। निर्गुण निराकार ब्रह्म की उपासना करने वाले कवि निर्गुण कहलाये और सगुण साकार ब्रह्म की उपासना करने वाले कवि सगुण कहलाये। निर्गुण और सगुण दोनों की दो–दो षाखाएं हैं। एक, निर्गुण संत कवियों की ज्ञान, प्रेम, एकेष्वरवादी भक्ति और गोरखनाथ के षून्य पर आधारित साधनात्मक भक्ति की विचार धारा। इसके प्रवर्तक और भक्तिकाल के एकमात्र क्रांतिकारी कवि कबीरदास हैं। दूसरे, निर्गुण सूफी कवियों की प्रेम, सौंदर्य और रहस्य से युक्त विचार धारा। इसके प्रवर्तक कवि मलिक मुहम्मद जायसी हैं। इसी तरह सगुण कवियों की एक धारा 'श्रीमद्भागवत' को आधार बनाकर कृष्ण को अपना आश्रयदाता चुनती है। कृष्णाश्रयी षाखा के प्रमुख कवि सूरदास हैं। और दूसरी सगुण धारा के कवि राम को अपना आश्रयदाता चुनती है। इसके प्रमुख कवि गोस्वामी तुलसीदास हैं। निर्गुण और सगुण सभी संतों और कवियों का लक्ष्य एक ही है अपने–अपने माध्यम से ईष्वर की प्राप्ति या साक्षात्कार। कोई ज्ञान मार्ग से वहां पहुंचता है तो कोई प्रेम मार्ग से। कोई कृष्ण के साथ सख्य, विनय या भक्ति भाव से ईष्वर के पास पहुंचता है तो कोई राम के साथ। इसे चित्र के माध्यम से भी समझा जा सकता है :–

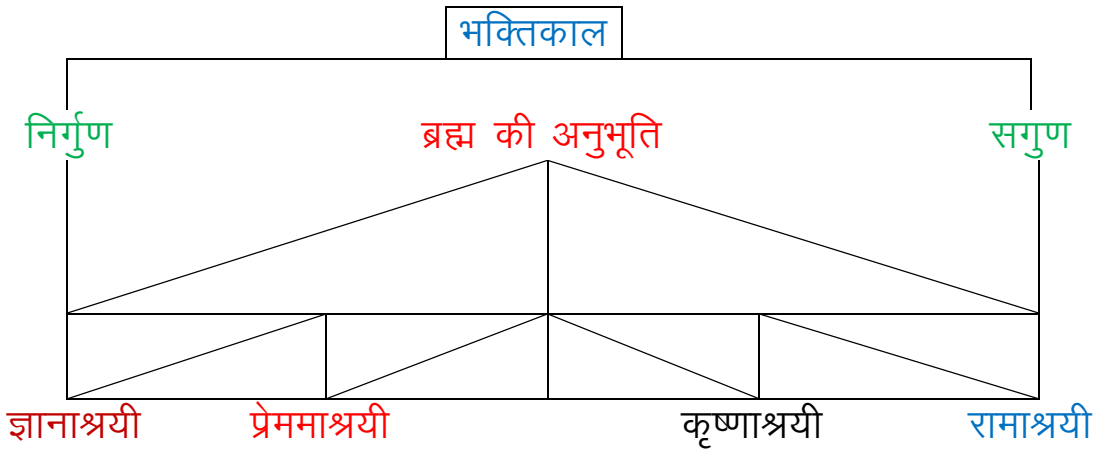

<u>निर्गुण भक्ति काव्यधारा का स्वरूप</u> :– निर्गुण भक्ति काव्यधारा में ब्रह्म की उपासना का अंदाज पारंपरिक नहीं है। ईष्वर का साक्षात स्वरूप नहीं है। ब्रह्म की उपासना, ब्रह्म से मिलन या ब्रह्म की खोज सब की अनुभूति की जाती है। गोरखनाथ की योग साधाना और षंकर के अद्वैत दर्षन का प्रभाव स्पष्ट रूप में दिखता है। इस धारा के कवियों का मानना है कि ईष्वर एक है, वह अवतारी नहीं है, वह निराकार, निर्गुण और सर्वव्यापी है। वह काबा–कैलाष, मंदिर–मस्जिद में नहीं है। वह सृष्टि के कण–कण में उपस्थित है और प्रत्येक मनुष्य के हृदय में निवास करता है। उसे न कोई देख सकता है और न ही छू सकता है। उसकी कोई जाति नहीं और न ही कोई आकार। वह अदृष्य है। उसका कोई स्वरूप नहीं है। उसकी कोई जाति नहीं है। उसकी केवल अनुभूति हो सकती है। वह भी केवल ज्ञान, प्रेम और इंसानियत भाव में संभव है। गुरु ही एक मात्र आधार है, जो ईष्वर के गूढ़ रहस्यों को खोलकर उनसे साक्षत या मिलन का मार्ग दिखा सकते हैं। दूसरा माध्यम है– हठयोग साधना। इस साधना में ध्यान और सुषुमना नाड़ी से अष्टचक्र की कठिन यात्रा होती है और फिर ईष्वर का दिव्य दर्षन। हठयोग साधना भी गुरू के माध्यम से ही संभव है।

इस प्रकार निर्गुण संत भक्त वे कहलाए, जिन्होंने निरअवतारी, निराकारी, गुणातीत, सूक्ष्म और कण–कण में व्यापत ब्रह्म की आराधना की। निर्गुण–निराकार ईष्वर को पाने के लिए गुरु के मार्गदर्षन, निर्मल एवं अहंकार विहीन हृदय की अनिवार्यता होती है। 'संत' बुद्धिमान और पवित्र आत्मा या अध्यात्मिक चेतना से युक्त उस सज्जन पुरुष को कहते हैं, जो अपने 'स्व' से उठकर 'अन्य' तथा समाज और राष्ट्र की कल्याण कामना से जुड़कर परमतत्व का साक्षात्कार किया है। कबीर, दादू, रैदास, गुरुनानक आदि ऐसे ही संत थे।

ईष्वर से साक्षात करने का एक मार्ग सूफियों का प्रेममार्ग था। प्रेम के साथ गुरु की अनिवार्यता यहां भी है। इनके यहां ज्ञान और साधना की जगह खाँटी 'प्रेम' को ही आधार माना गया है। प्रेमाख्यानों में प्रेम का मार्ग कठिन और संघर्षपूर्ण बतलाया गया है। जायसी, कुतबन, मंझन आदि प्रेममार्गी कवि हैं, जिनका मूल उद्देष्य हिन्दुओं के घरों की कहानी के माध्यम से सूफी धर्म का प्रचार–प्रसार करना था।

<u>सगुण भक्ति काव्यधारा का स्वरूप</u> :– हिन्दी भक्ति साहित्य में निर्गुण भक्ति काव्यधारा की तरह सगुण भक्ति काव्यधारा का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। सगुण भक्ति–काव्य सगुण और साकार ब्रह्म की भक्ति और उपासना पर आधारित है। इसमें विष्णु के अवतार 'राम' और 'कृष्ण' से संबंधित काव्य रचना की प्रमुखता है। सगुण भक्तों ने ईष्वर को साकार, गुणयुक्त, जातियुक्त, लीलावतारी तथा षक्ति, षील और सौंदर्य के रूप में देखा है। मध्ययुगीन सगुण संप्रदाय का उपजीव्य वैष्णव धर्म है।

सगुण भक्त कवियों ने पुराणों के विष्णु के अवतार 'राम' और 'कृष्ण' के लोकरक्षक चरित्र और लोकरंजक लीलाओं के माध्यम से भक्ति के एक नये आयाम को चित्रित किया। वाल्मीकि के रामायण में अवस्थित भगवान राम के स्वरूप से भिन्न तुलसी ने राम के चरित्र को 'मर्यादा पुरुषोत्तम', 'षक्ति', 'षील', 'सौंदर्य' के साथ गढ़कर राजनीतिक व्यवस्था के अनुकूल 'राम राज्य' की परिकल्पना किया। इसके लिए उनके राम खाँटी मानव रूप में उपस्थित हैं और एक नयी सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक व्यवस्था को जन्म देते हैं। राम राज्य की व्यवस्था पूर्णतः लोक पर आधारित, अनुषासित और मर्यादित है। तुलसी के 'राम चरित मानस' की रचना युगीन समय, समाज और सत्ता–व्यवस्था के हित के लिए अनिवार्य रूप में आवष्यक था। इसमें मानव राम का 'षक्ति', 'षील', 'सौंदर्य' के साथ समन्वय अद्‌भुत रूप में है। विष्व साहित्य में यह एक अनूठा महाकाव्य है।

वैष्णव परंपरा में विष्णु के अवतार के रूप में 'राम' पहले आते हैं और कृष्ण बाद में। इसी से हमने पहले राम के स्वरूप की चर्चा की और बाद में कृष्ण के स्वरूप की, जबकि सगुण भक्त कवियों में कृष्णाश्रयी षाखा के कवि पहले आते हैं फिर रामाश्रयी षाखा के कवि। कृष्णाश्रयी षाखा के प्रमुख विख्यात कवि सूरदास थे। उन्होंने 'श्रीमद्‌भागवत' को उपजीव्य मानकर कृष्ण के 'लोकरक्षक' और 'लोकरंजक' रूप को विराट् रूप में अभिव्यक्त किया। कृष्ण का अवतारी रूप मनमोहक होने के साथ श्रृंगारी भी है। लीला मुख्य है। 'बाल लीला' वात्सल्य रस से लबालब है। 'किषोर लीला' प्रेम और श्रृंगार को प्रकाषित करता है। 'वयस्क लीला' लोकरक्षक रूप में। अवतारवादी भावना में 'लीला' की अभिव्यक्ति अतिषय निराषा की स्थिति में अधर्म, अत्याचार और अन्याय के खिलाफ की गयी लीला है। यानी लीला चल–अचल, मूर्त–अमूर्त, निर्गुण–सगुण, वामन और विराट् है। उसके माध्यम से ही भगवान अपना एक रूप अनेक में बदलकर अत्याचारी और अन्यायी के विनाष के लिए उपस्थित होते हैं। सूर ने सगुण रूप की प्रतिष्ठा में सीधे–सीधे नहीं अप्रत्यक्ष किन्तु षालीन रूप से कबीर और उनके 'निर्गुण' का विरोध कर किया। नर में नारायण की परिकल्पना तुलसी की थी तो विष्णु के अवतारी रूप में श्रीकृष्ण की प्रतिष्ठा की गयी।

निर्गुण और सगुण में अंतर :– निर्गुण और सगुण काव्यधारा में आसमान औरर जमीन टाइप अंतर है– 1. निर्गुण संप्रदाय में बहुदेव एवं अवतारवाद का विरोध है, जबकि सगुण में बहुदेव और अवतार केन्द्र में है। सूर ने लिखा, ''तजो रे मन हरि विमुखनि कौ संग।'' तुलसीदास ने लिखा है, ''षिवद्रोही मम दास कहावा।'' 2. निर्गुण कवियों ने निर्गुण ब्रह्म की उपासना पर बल दिया है, यहां लीला के लिए कोई स्थान नहीं है, जबकि सगुण कवियों ने अस्त्र–षस्त्र से लैस सगुण साकार ब्रह्म की उपासना

पर बल दिया। सगुण के केन्द्र में 'षक्ति', 'षील', 'सौंदर्य' के साथ विराट् लीला की अभिव्यक्ति है। 3. 'गुरु' का महत्त्व सगुण–निर्गुण दोनों में है, किन्तु निर्गुण के लिए गुरु की महिमा ईष्वर से बड़ी है, वहीं सगुण में गुरु का स्थान भक्ति–ज्ञान प्राप्ति और वंदन का है। 4. निर्गुण कवियों ने समाज में व्याप्त मिथ्या आडम्बरों, रीति–रिवाजों एवं रूढ़ियों का खुलकर विरोध किया। मूर्तिपूजा, धर्म एवं पूजा के नाम पर की जाने वाली हिंसा, तीर्थाटन, रोजा, नमाज, हज, दान–पुण्य, मांसाहार आदि की डटकर कड़ी भर्त्सना की। सगुणवादियों के केन्द्र में मूर्तिपूजा, दान–पुण्य, तीर्थाटन, उपवास आदि प्रमुखता से मौजूद था। 5. निर्गुण कवियों ने जाति का विरोध खुलकर किया है, जबकि सगुण कवियों ने वर्णवाद, वर्गवाद को प्रमुखता से अभिव्यक्त किया है। 6. प्रेम का महत्त्व निर्गुण–सगुण दोनो में लगभान समान है। 7. नारी–निन्दा निर्गुण–सगुण दोनों में है। बावजूद इसके सगुण कवियों ने नारी का सम्मान किया है। कबीर ने लिखा है ''नारी की झांई पड़त अंधा होत भुजंग'' और तुलसी ने लिखा है– ''ढोल, गंवार, षूद्र, पषु, नारि, ये सब ताड़न के अधिकारी।'' 'राधा' के रूप में नारी का सम्मान सूर के यहां मिलता है। 8. निर्गुण कवियों में समाज में व्याप्त ब्राह्मणवाद या हिन्दुत्ववाद, इस्लामवाद तथा वाह्याचारों, वाह्याडम्बरों के खिलाफ जिस साहस से विद्रोह और क्रांति का बिगूल फूंका था, उस तरह का अद्भुत साहस सगुण विचारधारा के कवियों में नहीं था। कबीर का व्यापक प्रभाव समाज में था। उस समय कबीर के खिलाफ सीधा विरोध संभव न था। सगुण धारा के कवियों पर भी निर्गुण धारा का प्रभाव समाप्त नहीं हुआ था। उनकी रचनाओं में निर्गुण का प्रभाव देखा जा सकता है। इसी से सूर ने बड़ी षालीनता पूर्वक निर्गुण का विरोध करते हुए सगुण की स्थापना करते हुए कहा ''अविगत गति कछु कहत न आवै.....सूर सगुण पद गावै।''

इस प्रकार स्प्ष्ट है कि निर्गुण एवं सगुण भक्त कवियों के बीच पर्याप्त मतभेद था, बावजूद इसके कहना न होगा कि दोनों भक्त कवियों ने मिलकर शक्ति भावना के साथ समाज सुधार की भावना तथा समाज में व्याप्त अत्याचार व अन्याय के खिलाफ अभिव्यक्ति दी। जाति, धर्म, संप्रदाय, द्वेष, वर्ण और समाज आदि के समन्वय में निर्गुण और सगुण दोनों ही भक्त कवियों ने समन्वय करने की विराट् चेष्टा की है। वह न केवल साहित्य के लिए बल्कि समाज, मानवता, भारतीयता और राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत के लिए भी प्रेरणास्रोत रहा है।

दिनांक : 13/04/2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**